मित्र-द्रोह का फल

दो मित्र धर्मबुद्धि और पापबुद्धि हिम्मत नगर में रहते थे। एक बार पापबुद्धि के मन में एक विचार आया कि क्यों न मैं मित्र धर्मबुद्धि के साथ दूसरे देश जाकर धनोपार्जन करूँ। बाद में किसी न किसी युक्ति से उसका सारा धन ठग-हडप कर सुख-चैन से पूरी जिंदगी जीऊँगा। इसी नियति से पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को धन और ज्ञान प्राप्त होने का लोभ देते हुए अपने साथ बाहर जाने के लिए राजी कर लिया।

शुभ-मुहूर्त देखकर दोनों मित्र एक अन्य शहर के लिए रवाना हुए। जाते समय अपने साथ बहुत सा माल लेकर गये तथा मुँह माँगे दामों पर बेचकर खूब धनोपार्जन किया। अंततः प्रसन्न मन से गाँव की तरफ लौट गये।

गाँव के निकट पहुँचने पर पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को कहा कि मेरे विचार से गाँव में एक साथ सारा धन ले जाना उचित नहीं है। कुछ लोगों को हमसे ईष्या होने लगेगी, तो कुछ लोग कर्ज के रुप में पैसा माँगने लगेंगे। संभव है कि कोई चोर ही इसे चुरा ले। मेरे विचार से कुछ धन हमें जंगल में ही किसी सुरक्षित स्थान पर गाढ देनी चाहिए। अन्यथा सारा धन देखकर सन्यासी व महात्माओं का मन भी डोल जाता है।

सीधे-साधे धर्मबुद्धि ने पुनः पापबुद्धि के विचार में अपनी सहमति जताई।वहीं किसी सुरक्षित स्थान पर दोनों ने गड्ढे खोदकर अपना धन दबा दिया तथा घर की ओर प्रस्थान कर गये।

बाद में मौका देखकर एक रात कुबुद्धि ने वहाँ गडे सारे धन को चुपके से निकालकर हथिया लिया। कुछ दिनों के बाद धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि से कहा: भाई मुझे कुछ धन की आवश्यकता है। अतः आप मेरे साथ चलिए। पापबुद्धि तैयार हो गया। जब उसने धन निकालने के लिए गड्ढे को खोदा, तो वहाँ कुछ भी नहीं मिला। पापबुद्धि ने तुरंत रोने-चिल्लाने का अभिनय किया। उसने धर्मबुद्धि पर धन निकाल लेने का इल्जाम लगा दिया। दोनों लडने-झगडते न्यायाधीश के पास पहुँचे।

न्यायाधीश के सम्मुख दोनों ने अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया। न्यायाधीश ने सत्य का पता लगाने के लिए दिव्य-परीक्षा का आदेश दिया।

दोनों को बारी-बारी से अपने हाथ जलती हुई आग में डालने थे। पापबुद्धि ने इसका विरोध किया उसने कहा कि वन देवता गवाही देंगे। न्यायधीश ने यह मान लिया। पापबुद्धि ने अपने बाप को एक सूखे हुए पेड के खोखले में बैठा दिया। न्यायधीश ने पूछा तो आवाज आई कि चोरी धर्मबुद्धि ने की है।
तभी धर्मबुद्धि ने पेड के नीचे आग लगा दी। पेड जलने लगा और उसके साथ ही पापबुद्धि का बाप भी, वो बुरी तरह रोने-चिल्लाने लगा। थोडी देर में पापबुद्धि का पिता आग से झुलसा हुआ उस वृक्ष की जड में से निकला। उसने वनदेवता की साक्षी का सच्चा भेद प्रकट कर दिया।
न्यायाधीश ने पापबुद्धि को मौत की सजा दी और धर्मबुद्धि को उसका पूरा धन दिलवाया ।

सीख : मनुष्य का यह धर्म है कि वह उपाय की चिन्ता के साथ अपाय की भी चिन्ता करे।

भिड़-मेड़े का फल

मे भिड़ु एण्ड्रम्स्म्,ऊर पापएरम्स्,त्मिहु नगर म रहत थे। एक बार पापएरम्स्,क मन म एक विप्पार आया कि क्यों न भिड़ु एण्ड्रम्स्,क माथ मेश्र मे म्एकर एनपौस्न कर। बाप म किमी न किमी व्यक्ति म उमका भारा एन ०ग-हप कर माप-पने म पेगी स्पिंटगी स्पीउमी। ऊमी निवटि म पापएरम्स्,न एण्ड्रम्स्,क एन ऊर इन प्रभ्वहने का लहे म उहा अपन माथ बाहर स्न क लिए राम्पी कर लिया।
मह-महरभेपिकर मने भिड़ु एक मन-महर क लिए रवाना हुए। स्उ ममय अपन माथ बहरु मा भाल लकर गय उथा महे भागे म्भपर बैपकर पिड्र एनपौस्न किया।
अउउः प्रमत्रमन म गाव की उरफ लौट गय।
गाव क निकट पहुंपन पर पापएरम्स्,न एण्ड्रम्स्,क केहा कि भर विप्पार म गाव म एक माथ भारा एन ल स्ना उपिउ नहीं है। कुछ लगी के हेमम रौपह हने लगगी, उ कुछ लगी कल्प क हेप म पमी भागीन लगगी। मंहव है कि कहीं पर हो ऊम पिगा ल। भर विप्पार म कुछ एन हम स्पंगल म ही किमी मधुरिउ म्यान पर गाह देनी पाहिए।
अनभुग भारा एन मेपिकर मनाभी व मह-उपउ का मन ही हले स्उ हा।
मीए-माए एण्ड्रम्स्,न पुनः पापएरम्स्,क विप्पार म अपनी महमति स्उाई। वहीं किमी मधुरिउ म्यान पर मने न गहा खोदकर अपना एन मेहा दिया उथा भर की ऊर प्रम्यान कर गय।
बाप म मौका मेपिकर एक राउ कभुम्स्,न बहा गह माग एन क पपक म निकालकर हथिया लिया। कुछ दिन के बाप एण्ड्रम्स्,न पापएरम्स्,म केहा: हाएँ भाग कुछ एन की आवमकुउ है। अउः आप भर माथ पलिए। पापएरम्स्,उैयार हो गया। स्ब उमन एन निकालन के लिए गहृढ़ खोदा, उ बहा कुछ भी नहीं मिला। पापएरम्स्,न उुरुउ रोने-पिल्लान का अभिनय किया। उमन एण्ड्रम्स्,पर एन निकाल लने का ऊलग्राम लगा दिया।
मने लिहन-झगरहुउ न्यायाधीम क पाम पहुंप।
न्यायाधीम क ममम्म मने न अपना-अपना पक्ष प्रमहु किया। न्यायाधीम न मउय का पउ लगान के लिए दिव्य-परीक्षा का आदेश दिया।
मने के बारी-बारी म अपन हाथ स्लउ हुए आग म डालन थे। पापएरम्स्,न ऊमका विरोध किया उमन केहा कि वन देवउा गवाही देगा। न्यायधीम न यह मान लिया। पापएरम्स्,न अपन बाप क एक माप हुए पड क पिपील म बैठा दिया। न्यायधीम न पछा उ आवाज आई कि पोरी एण्ड्रम्स्,न की है।
उभी एण्ड्रम्स्,न पड क नीप आग लगा दी। पड स्लन लगा ऊर उमक माथ ही पापएरम्स्,का बाप भी, व बुरी उरह रोने-पिल्लान लगा। थोड़ी देर म पापएरम्स्,का पिउा आग म झुलमा हुआ उम वृक्ष की स्ड म म निकला। उमन वनदेवउा की माक्षी का मम्प्रण भेद प्रकट कर दिया।
न्यायाधीम न पापएरम्स्,क बेउ की मउ दी ऊर एण्ड्रम्स्,क उमका पुरा एन दिलवाया।

मीप : मनधुहुका यह एयहु कि वह उपाय की पिन्ना क माथ अपाय की भी पिन्ना कर।

अनवुाद - उर्मिला पमा